WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

बुधवार
13 दिसंबर, 2023
अंक - 123

कृषक वैज्ञानिक संवाद में बताए सब्जी की खेती के वैज्ञानिक पहलू

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के सब्जी अनुभाग में संचालित सब्जी उत्कृष्टता केंद्र परियोजना के अंतर्गत एक दिवसीय कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन ग्राम पांडेय निवादा में किया गया । परियोजना के समन्वयक डॉक्टर डीपी सिंह ने बताया कि सब्जी उत्कृष्टता केंद्र का मुख्य उद्देश्य सब्जियों की खेती को बढ़ावा देने के साथ-साथ किसानों को संरक्षित खेती करने के लिए प्रोत्साहित करना है्र उन्होंने बताया कि किसानों को पारंपरिक खेती से हटकर आधुनिक खेती के जरिए कम लागत में ज्यादा आमदनी के गुरु सिखाए जाते हैं। इस अवसर पर इस अवसर पर साग भाजी सस्य विद डॉक्टर राजीव द्वारा बताया गया कि धान गेहूं फसल चक्र के नियमित रूप से अपनाने के कारण मिट्टी की उर्वरा शक्ति का व्हास हो रहा है इसलिए किसानों को अपने फसल चक्र में दलहनी फसलों के साथ-साथ सब्जी फसलों को भी समायोजित किया जाना वर्तमान समय की मांग है। कार्यक्रम में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर ए एन शुक्ल द्वारा लता वर्गीय फसलों में एकीकृतनाशी जीव प्रबंधन पर चर्चा करते हुए बताया गया की पत्तियों का रस चूसने वाले कीटों की रोकथाम के लिए नीले एवं पीले फेरोमेनट्रैप को अपने खेतों में अवश्य लगाएं। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ मनोज कटियार द्वारा दलहनी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि मूंग की फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए श्वेता, विराट एवं शिखा प्रजातियों की बुवाई करें। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान द्वारा तिलहनी फसलों पर चर्चा करते हुए बताया कि सरसों की फसल बुवाई के 20 से 25 दिन बाद बिरलीकरण अवश्य करें ताकि अधिक पैदावार ली जा सके उन्होंने सल्फर के प्रयोग करने की सलाह दी।

कृषक-वैज्ञानिक के बीच संवाद, सब्जी की खेती के बताये वैज्ञानिक पहलू

❑ पारंपरिक खेती के बजाय आधुनिक खेती करने से बढ़ेगी आमदनी

(आज समाचार सेवा)
कानपुर, 13 दिसंबर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के सब्जी अनुभाग में संचालित सब्जी उत्कृष्ठता केंद्र परियोजना के अंतर्गत एक दिवसीय कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन ग्राम पांडेय निवादा में किया गया । परियोजना के समन्वयक डा. डीपी सिंह ने बताया कि सब्जी उत्कृष्ठता केंद्र का मुख्य उद्देश्य सब्जियों की खेती को बढ़ावा देने के साथ-साथ किसानों को संरक्षित खेती करने के लिए प्रोत्साहित करना है। उन्होंने बताया कि किसानों को पारंपरिक खेती से हटकर आधुनिक खेती के जरिए कम लागत में ज्यादा आमदनी के गुर सिखाए जाते हैं। वैज्ञानिक डॉ राजीव ने बताया किधान गेहूं फसल चक्र के नियमित रूप से अपनाने के कारण मिट्टी की उर्वरा शक्ति का ह्रास हो रहा है। इसलिए किसानों को अपने फसल चक्र में दलहनी फसलों के साथ-साथ सब्जी फसलों को भी समायोजित किया जाना वर्तमान समय की मांग है। कार्यक्रम में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ए एन शुक्ल ने लता वर्गीय फसलों में एकीकृतनाशी जीव प्रबंधन पर चर्चा करते हुए बताया गया की पत्तियों का रस चूसने वाले कीटों की रोकथाम के लिए नीले एवं पीले फेरोमेनट्रैप को अपने खेतों में अवश्य लगाएं। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ मनोज कटियार ने दलहनी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि मूंग की फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए श्वेता, विराट एवं शिखा प्रजातियों की बुवाई करें। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने तिलहनी फसलों पर चर्चा करते हुए बताया कि सरसों की फसल बुवाई के 20 से 25 दिन बाद बिरलीकरण अवश्य करें ताकि अधिक पैदावार ली जा सके उन्होंने सल्फर के प्रयोग करने की सलाह दी।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते वैज्ञानिक।

सूर्यास्त 05.12 | कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित | वर्ष : 15 अंक : 163 | कानपुर, गुरुवार 14 दिसम्बर 2023 | नगर संस्करण | पृष्ठ 12 | मूल्य : 2.00 रुपए

न्यूनतम 15.0°

62,710

78,500

राष्ट्रीय स्वरूप

किसानों को आधुनिक खेती के जरिए कम लागत में ज्यादा आमदनी की सिखाएं गुण

कानपुर । सीएसए के सब्जी अनुभाग में संचालित सब्जी उत्कृष्ठता केंद्र परियोजना के अंतर्गत एक दिवसीय कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन ग्राम पांडेय निवादा में किया गया । परियोजना के समन्वयक डॉक्टर डीपी सिंह ने बताया कि सब्जी उत्कृष्ठता केंद्र का मुख्य उद्देश्य सब्जियों की खेती को बढ़ावा देने के साथ-साथ किसानों को संरक्षित खेती करने के लिए प्रोत्साहित करना है,उन्होंने बताया कि किसानों को पारंपरिक खेती से हटकर आधुनिक खेती के जरिए कम लागत में ज्यादा आमदनी के गुरु सिखाए जाते हैं। इस अवसर पर इस अवसर पर साग भाजी सस्य विद डॉक्टर राजीव द्वारा बताया गया कि धान गेहूं फसल चक्र के नियमित रूप से अपनाने के कारण मिट्टी की उर्वरा शक्ति का व्हास हो

रहा है इसलिए किसानों को अपने फसल चक्र में दलहनी फसलों के साथ-साथ सब्जी फसलों को भी समायोजित किया जाना वर्तमान समय की मांग है। कार्यक्रम में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर ए एन शुक्ल द्वारा लता वर्गीय फसलों में एकीकृतनाशी जीव प्रबंधन पर चर्चा करते हुए बताया गया की पत्तियों का रस चूसने वाले कीटों की रोकथाम के लिए नीले एवं पीले फेरोमेनट्रैप को अपने खेतों में अवश्य लगाएं। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ मनोज कटियार द्वारा दलहनी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि मूंग की फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए श्वेता, विराट एवं शिखा प्रजातियों की बुवाई करें। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान द्वारा तिलहनी फसलों पर चर्चा करते हुए बताया कि सरसों की फसल बुवाई के 20 से 25 दिन बाद बिरलीकरण अवश्य करें ताकि अधिक पैदावार ली जा सके उन्होंने सल्फर के प्रयोग करने की सलाह दी।

निक
आज का कानपुर
काशित लखनऊ, उन्नाव, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, मौहदा, बादा, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गाजीपुर, कानपुर देहात, सुल्तानपुर, अमेठी, बहराइच में प्रसारित

कृषक वैज्ञानिक संवाद में बताए, सब्जी की खेती के वैज्ञानिक पहलू

आज का कानपुर

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के सब्जी अनुभाग में संचालित सब्जी उत्कृष्ठता केंद्र परियोजना के अंतर्गत एक दिवसीय कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन ग्राम पांडेय निवादा में किया गया। परियोजना के समन्वयक डॉक्टर डीपी सिंह ने बताया कि सब्जी उत्कृष्ठता केंद्र का मुख्य उद्देश्य सब्जियों की खेती को बढ़ावा देने के साथ-साथ किसानों को संरक्षित खेती करने के लिए प्रोत्साहित करना है उन्होंने बताया कि किसानों को पारंपरिक खेती से हटकर आधुनिक खेती के जरिए कम लागत में ज्यादा आमदनी के गुरु सिखाए जाते हैं। इस अवसर पर इस अवसर पर साग भाजी सस्य विद डॉक्टर राजीव द्वारा बताया गया कि धान गेहूं फसल चक्र के नियमित रूप से अपनाने के कारण मिट्टी की उर्वरा शक्ति का व्हास हो रहा है इसलिए किसानों को अपने फसल चक्र में दलहनी फसलों के साथ-साथ सब्जी फसलों को भी समायोजित किया जाना वर्तमान समय की मांग है। कार्यक्रम में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर ए एन शुक्ल द्वारा लता वर्गीय फसलों में एकीकृतनाशी जीव प्रबंधन पर चर्चा करते हुए बताया गया की पत्तियों का रस चूसने वाले कीटों की रोकथाम के लिए नीले एवं पीले फेरोमेनट्रैप को अपने खेतों में अवश्य लगाएं। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ मनोज कटियार द्वारा दलहनी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि मूंग की फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए श्वेता, विराट एवं शिखा प्रजातियों की बुवाई करें। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान द्वारा तिलहनी फसलों पर चर्चा करते हुए बताया कि सरसों की फसल बुवाई के 20 से 25 दिन बाद बिरलीकरण अवश्य करें ताकि अधिक पैदावार ली जा सके उन्होंने सल्फर के प्रयोग करने की सलाह दी।

सत्य का असर समाचार पत्र

Thursday 14th December 2023 | jksingh.hardoi@gmail.com | website: satyakaasar.com

कृषक वैज्ञानिक संवाद में बताए, सब्जी की खेती के वैज्ञानिक पहलू

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के सब्जी अनुभाग में संचालित सब्जी उत्कृष्टता केंद्र परियोजना के अंतर्गत एक दिवसीय कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन ग्राम पांडेय निवादा में किया गया । परियोजना के समन्वयक डॉक्टर डीपी सिंह ने बताया कि सब्जी उत्कृष्टता केंद्र का मुख्य उद्देश्य सब्जियों की खेती को बढ़ावा देने के साथ-साथ किसानों को संरक्षित खेती करने के लिए प्रोत्साहित करना हैn उन्होंने बताया कि किसानों को पारंपरिक खेती से हटकर आधुनिक खेती के जरिए कम लागत में ज्यादा आमदनी के गुरु सिखाए जाते हैं। इस अवसर पर इस अवसर पर साग भाजी सस्य विद डॉक्टर राजीव द्वारा बताया गया कि धान गेहूं फसल चक्र के नियमित रूप से अपनाने के कारण मिट्टी की उर्वरा शक्ति का व्हास हो रहा है इसलिए किसानों को अपने फसल चक्र में दलहनी फसलों के साथ-साथ सब्जी फसलों को भी समायोजित किया जाना वर्तमान समय की मांग है। कार्यक्रम में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर ए एन शुक्ल द्वारा लता वर्गीय फसलों में एकीकृतनाशी जीव प्रबंधन पर चर्चा करते हुए बताया गया की पत्तियों का रस चूसने वाले कीटों की रोकथाम के लिए नीले एवं पीले फेरोमेनट्रैप को अपने खेतों में अवश्य लगाएं। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ मनोज कटियार द्वारा दलहनी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि मूंग की फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए श्वेता, विराट एवं शिखा प्रजातियों की बुवाई करें। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान द्वारा तिलहनी फसलों पर चर्चा करते हुए बताया कि सरसों की फसल बुवाई के 20 से 25 दिन बाद बिरलीकरण अवश्य करें ताकि अधिक पैदावार ली जा सके उन्होंने सल्फर के प्रयोग करने की सलाह दी।

उपदेश टाइम्स हिन्दी दैनिक

कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन हुआ

कानपुर नगर उपदेश टाइम्स चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के सब्जी अनुभाग में संचालित सब्जी उत्कृष्ठता केंद्र परियोजना के अंतर्गत एक दिवसीय कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन ग्राम पांडेय निवादा में किया गया परियोजना के समन्वयक डॉक्टर डीपी सिंह ने बताया कि सब्जी उत्कृष्ठता केंद्र का मुख्य उद्देश्य सब्जियों की खेती को बढ़ावा देने के साथ-साथ किसानों को संरक्षित खेती करने के लिए प्रोत्साहित करना है उन्होंने बताया कि किसानों को पारंपरिक खेती से हटकर आधुनिक खेती के जरिए कम लागत में ज्यादा आमदनी के गुरु सिखाए जाते हैं इस अवसर पर इस अवसर पर साग भाजी सस्य विद डॉक्टर राजीव द्वारा बताया गया कि धान गेहूं फसल चक्र के नियमित रूप से अपनाने के कारण मिट्टी की उर्वरा शक्ति का व्हास हो रहा है इसलिए किसानों को अपने फसल चक्र में दलहनी फसलों के साथ-साथ सब्जी फसलों को भी समायोजित किया जाना वर्तमान समय की मांग है कार्यक्रम में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर ए एन शुक्ल द्वारा लता वर्गीय फसलों में एकीकृतनाशी जीव प्रबंधन पर चर्चा करते हुए बताया गया की पत्तियों का रस चूसने वाले कीटों की रोकथाम के लिए नीले एवं पीले फेरोमेन ट्रैप को अपने खेतों में अवश्य लगाएं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ मनोज कटियार द्वारा दलहनी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि मूंग की फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए श्वेता, विराट एवं शिखा प्रजातियों की बुवाई करें इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान द्वारा तिलहनी फसलों पर चर्चा करते हुए बताया कि सरसों की फसल बुवाई के 20 से 25 दिन बाद बिरली करण अवश्य करें ताकि अधिक पैदावार ली जा सके उन्होंने सल्फर के प्रयोग करने की सलाह दी।

Sign in to edit and save changes to this file.

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

जरीवाल-संजय सिंह को झटका, मानहानि... 12

किसानों पर हमलावर हुआ बाघ बमुश्किल भाग कर... 10

जन एक्सप्रेस

लखनऊ

वर्षः 15 | अंकः 63

मूल्यः ₹3.00/-

पेज : 12

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

गुरुवार | 14 दिसंबर, 2023

किसानों को अपने फसल चक्र में दलहनी फसलों के साथ-साथ सब्जी फसलों को भी करना होगा समायोजित

जन एक्सप्रेस | कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के सब्जी अनुभाग में संचालित सब्जी उत्कृष्ठता केंद्र परियोजना के अंतर्गत एक दिवसीय कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन बुधवार को ग्राम पांडेय निवादा में हुआ। परियोजना समन्वयक डॉ.डी.पी.सिंह ने बताया कि सब्जी उत्कृष्ठता केंद्र का मुख्य उद्देश्य सब्जियों की खेती को बढ़ावा देने के साथ किसानों को संरक्षित खेती करने के लिए प्रोत्साहित करना रहा। साग भाजी सस्य विद डॉ.राजीव ने बताया कि धान गेहूं फसल चक्र को नियमित रूप से अपनाने के कारण मिट्टी की उर्वरा शक्ति में कमी आ रही है। इसलिए वर्तमान में किसानों को अपने फसल चक्र में दलहनी फसलों के साथ-साथ सब्जी फसलों को भी समायोजित करना चाहिए। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.ए.एन.शुक्ल ने लता वर्गीय फसलों में एकीकृतनाशी जीव प्रबंधन पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि पत्तियों का रस चूसने वाले कीटों की रोकथाम के लिए नीले एवं पीले फेरोमेनट्रैप को अपने खेतों में लगाना चाहिए। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.मनोज कटियार ने कहा कि मूंग की फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए श्वेता, विराट एवं शिखा प्रजातियों की बुवाई करनी चाहिए। मृदा वैज्ञानिक डॉ.खलील खान ने बताया कि सरसों की फसल बुवाई के 20 से 25 दिन बाद बिरलीकरण करना चाहिए जिससे अधिक पैदावार ली जा सके। उन्होंने सल्फर के प्रयोग करने की सलाह दी।

वर्ष-17 अंक-48 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, गुरूवार 14 दिसम्बर 2023

कानपुर से प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात, औरैया में प्रसारित

दैनिक

RNI No.- UPHIN/2007/27090

नगर छाया

आप की आवाज़.....

कृषक वैज्ञानिक संवाद में बताए सब्जी की खेती के वैज्ञानिक पहलू

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के सब्जी अनुभाग में संचालित सब्जी उत्कृष्ठता केंद्र परियोजना के अंतर्गत एक दिवसीय कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन ग्राम पांडेय निवादा में किया गया । परियोजना के समन्वयक डॉक्टर डीपी सिंह ने बताया कि सब्जी उत्कृष्ठता केंद्र का मुख्य उद्देश्य सब्जियों की खेती को बढ़ावा देने के साथ-साथ किसानों को संरक्षित खेती करने के लिए प्रोत्साहित करना हैठु उन्होंने बताया कि किसानों को पारंपरिक खेती से हटकर आधुनिक खेती के जरिए कम लागत में ज्यादा आमदनी के गुरु सिखाए जाते हैं। इस अवसर पर इस अवसर पर साग भाजी सस्य विद डॉक्टर राजीव द्वारा बताया गया कि धान गेहूं फसल चक्र के नियमित रूप से अपनाने के कारण मिट्टी की उर्वरा शक्ति का व्हास हो रहा है इसलिए किसानों को अपने फसल चक्र में दलहनी फसलों के साथ-साथ सब्जी फसलों को भी समायोजित किया जाना वर्तमान समय की मांग है। कार्यक्रम में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर ए एन शुक्ल द्वारा लता वर्गीय फसलों में एकीकृतनाशी जीव प्रबंधन पर चर्चा करते हुए बताया गया की पत्तियों का रस चूसने वाले कीटों की रोकथाम के लिए नीले एवं पीले फेरोमेनट्रैप को अपने खेतों में अवश्य लगाएं। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ मनोज कटियार द्वारा दलहनी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि मूंग की फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए श्वेता, विराट एवं शिखा प्रजातियों की बुवाई करें। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान द्वारा तिलहनी फसलों पर चर्चा करते हुए बताया कि सरसों की फसल बुवाई के 20 से 25 दिन बाद बिरलीकरण अवश्य करें ताकि अधिक पैदावार ली जा सके उन्होंने सल्फर के प्रयोग करने की सलाह दी।